धर्म जीवन

फरवरी – 2014

* दानियों की लिस्ट
* अन्धा बनने के अवसर
* अंह अनुराग
* ऐसे थे मेरे माता पिता
* चण्डीगढ़ में माता – पिता सन्तान व्रत
* दोस्त हो तो ऐसा
* मानवता का वह चेहरा.... खो गया अनंत में

महोत्सव पर दान की लिस्ट

श्रीमान बलदेव सिंह जी और परिवार दान	1,00000 रू०
श्रीमान बलदेव सिंह जी और परिवार लंगर के लिए	20,000 रू०
डाक्टर वी. सी. खेड़ा साहिब	25,000 रू०
डा० सी. एस. जैरथ	5000 रू०
श्री नवप्रीत सेखों	5000 रू०
श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना	5000 रू०
श्री सुभाष जी पंचकूला	2100 रू०
श्रीमान जगदीष सिंह जी सेखों	2000 रू०
श्रीमती अमरजीत बराड़	2000 रू०
अशोक जी अम्बाला	1100 रू०
श्रीमती सरोज जी जिन्दल	1100 रू०
श्रीमती खुशपाल सिंह बंगा	1100 रू०
श्रीमती सरोज जी कुक्कड़	1000 रू०
श्रीमती प्रेम बाला खोसा देहली	1200 रू०
श्रीमती बलबहादुर सिंह जी	1000 रू०
श्रीमती आशा जी	1000 रू०
श्रीमती वीरपाल जी समराला	1000 रू०
डा० सतिन्द्र जी ढिल्लों	1000 रू०
श्रीमान कै. एस चौहान	1000 रू०
श्रीमान गुरूदेव राज जी केसूपुरा	1000 रू०
श्रीमान मधू सूदन जी	1000 रू०
सत्कार शीना जी	500 रू०
श्री देव सुमन जी	500 रू०
श्री ज्ञान जी गोनियाना	500 रू०
श्री राम चन्द जी	500 रू०
श्री सुखदेव सिंह गोनियाना	500 रू०
श्री सुभाष रूचलानी	500 रू०
श्री मोनिका कुक्कड़	500 रू०
गुरूदेव सिंह मान	500 रू०
श्री ओ. पी. वर्मा यमुना नगर	500 रू०
श्री मुख़तियार सिंह जी	500 रू०
श्री रामवीर बंगा	500 रू०
चमन लाल जी चण्डीगढ़	500 रू०
श्री प्यारा सिंह जी पदमपुर	500 रू०
श्री तेज सिंह जी थराजवाला	500 रू०
श्री राज सिंह जी थराजवाला	500 रू०
डा० इकबाल सिंह जी थराजवाला	500 रू०
श्री कपूर चन्द जी कैथल	500 रू०
श्री दूनी चन्द जी निझावन	500 रू०
सरला जी बाहरी	500 रू०
- - -	500 रू०
जो और दान इकट्ठा हुआ	16800 रू०

डाक्टर देव अनुरूप जी बराड़ सपुत्र श्रीमान बलदेव सिंह जी ने 10 हज़ार डॉलर दान देने का वादा किया जो 6 लाख से अधिक बनता है

भेंट फंड	5645 रू०
किताबें बिकी	4100 रू०
नियत दान	24950 रू०
धर्म जीवन	2900 रू०
हित स्त्रोत	1650 रू०

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 2
फरवरी – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अन्धा बनने का अवसर

कोई भी होश वाला मनुष्य अन्धा बनना नहीं चाहता, क्योंकि आंखें एक अद्भुत देन है, इससे वंचित होकर मनुष्य दुखों का घर बनने के लिए बेबस और लाचार होता है। अपना मुंह, माथा, सिर, घुटने टूटने तुड़वाने के लिए बेबस हो जाता है। अपनी हानि और टकरा कर और वस्तुओं की भी हानि करने के लिए सदा मजबूर रहता है।

स्थूल शरीर और स्थूल आंखों के घाटे और हानि का तो हर मोटी से मोटी बुद्धि वाले को भी पता होता है और जानकारी है, परन्तु आत्मा, मन या हृदय जो अति सूक्ष्म अदृष्य शक्तिमय सत्य और सार वस्तुएं हैं, उनकी हस्ती के प्रति, उनके अंगों के प्रति, उनकी आंखों के प्रति और उनकी हानि और घाटे के प्रति सच्ची होश, सोझी, ज्ञान वा जानकारी करोड़ों, अरबों मनुष्य को बिल्कुल नहीं है। इस पक्ष में बहुत गिणती में मनुष्य अन्धे ही रहते हैं और अन्धेरे में ही पशुओं की तरह जीवन व्यतीत करके चले जाते हैं। मनुष्य बहुत विद्वान होकर, उच्च पद रखकर, महान लेखक वा वक्ता होकर, धनी होकर, बहुत योग्यताएं रखकर वा समृद्ध होकर भी अन्धेरे में ही रहता है। विशेषकर अपने विषय में, अपनी हस्ती के विषय में, अपने सच्चे भले वा बुरे के विषय में, अपनी सच्ची भलाई के विषय में बहुत कुछ अन्धा ही रहता है और ऐसा करने के लिए मजबूर है। इस अन्धेरे के कारण उसे बहुत हानि वा घाटा उठाना पड़ता है पर उसे अनुभव नहीं होता।

हम देव समाजियों को जिन्हें, मान्सिक, सात्विक वा रूहानी अन्धेरे के विषय में कुछ मान्सिक रूप से पता है भी है, फिर भी इसी में रहने के लिए बेवस हैं, और इसका हमें कोई शोक, दुख या घाटा अनुभव नहीं होता।

आत्मा की अति सूक्ष्म, सत्य, सार वा मुख्य हस्ती और उसके हानि लाभ के ईलावा हम बहुत से 99% चार पक्षों में अन्धेरे में रहते हैं, कोई एक पक्ष में अच्छी सोझी, होश वा बोध रखकर दूसरे सब पक्षों में अन्धेरे में या कुछ पक्षों में अन्धा ही रहता है। परन्तु एक पक्ष में कुछ सोझी के कारण हम अपने आपको सब पक्षों में ही जानकार, होशमन्द या बोधी देखने का भ्रम, भुलेखा पालते रहते हैं। हम गुणवानों के गुण देखने सम्बन्धी या दूसरों के दुख, सन्ताप, पीड़ा, निरादर, अपमान, ठेस, हानि और अभावों को देखने के सम्बन्ध में, अपने मेहरबानों की मेहरबानियों की वर्षा सम्बन्धी तीनों पक्षों में या किसी एक या दो पक्षों में

अकसर अन्धे हैं। परन्तु अंहकार में अन्धे होकर भी अपने आपको अन्धा बिल्कुल नहीं देखते। जिस चौथे पक्ष में हम अन्धे रहते हैं, यह अन्धापन है अपने दोषों, अपनी अयोग्यताओं, अपनी भूलों, अवज्ञाओं का नीचता और हानियों को न देखने का। इस पक्ष में मनुष्य का हर बच्चा ही कम या अधिक अन्धेरे में ही रहता है। देव समाज में आकर विकासार्थी बनकर, कर्मचारी बनकर, उच्च पद धारी रहकर, परोपकार के अच्छे अच्छे काम करके, लेख लिख कर, सभाएं करवाकर, दान दे कर, और भले काम करके भी अन्धेरा कायम रहता है, अपनी हानि वा दूसरों को दुख पहुंचाने वा हानि करने के लिए मजबूर, बेबस वा लाचार हैं। केवल और केवल वहां सौभाग्यवान कुछ गिने चुने जन जो परम पू० भगवान देवात्मा के प्रति आकर्षण या अनुराग भावों से शोभित हो जाते हैं, और जिनकी रसाई परम पू० भगवान देवात्मा की आत्म प्रदर्शन अद्भुत ज्योति तक किसी यथेष्ट अंश हो जाती है, केवल वही सौभाग्यवान जन इस पक्ष में अन्धेपन और अन्धेपन की हानियों से बचने के योग्य होते जाते हैं। बाकी सब बड़े से बड़े प्रचारक, उपदेशक और कर्मचारी आदि सब स्वंय के सम्बन्ध में अन्धेरे के शिकार होने के लिए और रहने के लिए लाचार वा मजबूर रहते हैं। वह अपने भीतर के नीच भाव बढ़ाकर, खुलमखुल्ला अपना अन्धापन बनने के अवसर पाने के लिए मजबूर हैं।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज का जीवन हर सच्चे उच्च जीवन के अभिलाषी जन के लिए, एक अति अद्भुत रोशनी का मिनार है। उन जैसा महान साधक, तपस्वी वा योग्य उच्च और सफल प्रचारक कई सदियों में ही हो सकता है। आज के हालात में जो सेवक सच्चे अर्थों में उच्च जीवन प्राप्ति का अभिलाषी है, यदि वह उक्त श्रद्धेय श्रीमान के रोशनी से भरपूर जीवन का बार बार अध्ययन और उनके साधनों की घोर यत्न से पैरवी नहीं करता, तब वह अपने उच्च जीवन की प्राप्ति के मनोरथ में कभी सफल नहीं हो सकता।

श्रद्धेय श्रीमान जी, गुरू महाराज की साक्षात वर्तमानता में और उनके अति गहरे संपर्क में रहकर भी उच्च हास्तियों श्रद्धेया जी, पंडित परमेश्वर दत्त जी जैसी हस्तियों के दर्शन और सम्पर्क पाकर भी और प्रचार सम्बन्धी बड़ी बड़ी सफलताएं प्राप्त करके भी महसूस करते थे कि मैं उक्त नायाब हालात पाकर, अन्धा होने का अवसर प्राप्त करता रहा और अन्धा बनकर वह अपनी हानि, मिशन की हानि करने का कारण बनता रहा। यह ठोस, आंखें खोलने वाली विशेष घटना से आज के हालात में जहां एक भी संजीदा, सच्चा, कठिनाईयों से जूझने वाला साधक नहीं रहा, हमें बहुत अच्छी तरह से सचेत होने की अति गहराई से जागने की और अपने आत्म-अन्धेपन से सच्चा भय और दुखी होने की जितनी आवश्यकता है, उसको शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता।

उक्त श्रद्धेय श्रीमान जी अपने एक रोशनी भरपूर आत्म-बोध वाले पहले लेख में साफ फरमाते हैं कि वह किस प्रकार अन्धा बनने का अवसर पाते रहे। वह फरमाते हैं कि उनको समाज का काम करते करते मुझे पूर्ण अबोध हालत में ऐसे हालात वा ऐसे वजूदों में रहने का अवसर मिला, कि जहां मैं सालों तक, एक तरफ अपने रक्षाकारी सम्बन्धियों (जो आज पूर्ण नायाब हैं) से लगभग अलग रहा और दूसरी तरफ जीवन-पथ से अन्ध और नीच गति परायण जनों में रहकर अपने अन्दर की नीच गति दायक शक्तियों को बढ़ाने और

अपने इर्दगिर्द के लोगों से रात दिन सन्मान पाते रहकर अनुचित अभिमान और घमंड के भाव के साथ अधिक से अधिक अन्धा बनने का अवसर पाता रहा" इससे आगे श्रद्धेय श्रीमान जी फरमाते हैं: -

"इसका फल यह हुआ कि एक ओर मेरे अन्दर नीच भावों की तृप्ति के समानों के लिए आकर्षण बहुत बढ़ गया और मैं धर्म वहीन और नीच गतियों के अधीन परन्तु मेरे लिए सुखदाई और तृप्ति कर वजूदों के बीच निवास करके सन्तुष्ट रहने लगा और दूसरी और दूसरी ओर घमंड मेरे भीतर इतना बढ़ गया कि उसने केवल यही नहीं कि मेरे भीतर के श्रद्धा भाव को बहुत सीमा तक नष्ट कर दिया उल्टा कोई उच्च से उच्च जन, यहां तक कि स्वयं परम पू० भगवान भी मेरी कोई हीनता और नीचता मुझ पर प्रगट करते तो मैं उन्हें भी घृणा करने लग जाता" श्रीमान जी आगे फरमाते हैं: -

"भगवान का ऐसा कथन भी और उनका कोई लेख कि जिस के अन्दर मेरी सच्ची त्रुटि या अवज्ञा का भी वर्णन होता, वह मुझे बहुत बुरा लगता, अपनी रूचि के विरूद्ध भगवान की बानी सुनने से बचे रहने के लिए, मैं उनसे परे परे रहना शुरू कर दिया।. ..... उसका यह फल हुआ कि मेरे भीतर कितने प्रकार के महा भयानक नीच बन्धन फिर पैदा हो गए और बढ़ गए..... मैं मौत की घाटी के बिल्कुल करीब पहुँच चुका था..... शोक और महा शोक कि इस सारे पतनकारी महा नीच परिवर्तन और उस को लाने वाली नीच गतियों का मुझे कोई पता नहीं था।

यह विशेष उक्त एतिहासिक घटना पुकार पुकार कर प्रत्येक सच्चे, उच्च जीवन अभिलाषी को कह रही है कि यदि परम पू० भगवान की वर्तमानता में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसी उच्च महान हस्ती घोर अन्धेरे के शिकार होने के अवसर पा सकती है, तो आज जब कि एक भी महान साधक और उच्च जीवन अभिलाषी कहीं दिखाई नहीं देता, उस सूरत में आज के अभागे साथी सेवकों को किस प्रकार भय और दुख के साथ भरकर यह सोचने की बेहद अवश्यकता है कि हम किस खेत की मूली है। हम तुच्छों की उक्त अन्धेरे का शिकार होने के लिए किस कदर फिकरमन्द, भयभीत होने की अवश्यकता है। आओ हम विचार करें कि वह मोटे मोटे हालात या कारण कौन से हैं और उन्होंने अच्छी तरह जांचिए कि जो मनुष्य को आत्मिक अन्धा बनने के लिए अवश्य अवसर देते हैं, या अन्धा बनाने के मुख्य कारण बनते हैं?

(1) **<u>अपने रक्षाकारी सम्बन्धियों से परे रहना:</u>** - आज परम पू० भगवान देवात्मा और उनकी साक्षात रक्षा में घड़े संवारे जनों की पूर्ण अवर्तमानता के कारण रक्षाकारी सम्बन्धियों का बहुत बड़ा आकाल पड़ गया है। इसलिए जो कई पक्षों में योग्य, सच्चे किसी अंश अपने भले के चाहवान भी हैं, उन्हें कोई ऐसा जन नहीं दिखाई देता जिस से उन्हें कोई रहबरी मिल सके या सहायता मिल सके। इसलिए कई योग्य जन स्वेच्छाचारी होने के लिए या अपने गुरू आप बनने के लिए मजबूर हैं। इसमें हालात के कसूर के ईलावा एक और वृति का भी दोष है जो अपने आप में ही अन्धेरे का स्त्रोत है "मैं ठीक हूं" की वृति, मुझ से बड़ा, मुझ से सयाना, मुझसे योग्य और (किसी भी पक्ष में) कोई नहीं। किसी पक्ष में हमारी संसारिक प्राप्ति भी हमें इस वृति का स्वामी बनाने में बड़ी सहायक बनाती है। यदि अैमरसन जैसा महान विचारशील यह सकता है कि मैं जिस भी व्यक्ति को मिलता हूं या जिसके भी

संपर्क में आता हूं, तो वह मुझे पहले से किसी अंश भला और अच्छा बना जाता है, तो हमें भी सोचना पड़ेगा, अपनी वृति का बहुत बारीकी से ध्यान करना पड़ेगा। अपना गुरू आप बनने वाला, मैं सबसे ठीक हूं, योग्य और महान की सोच वाला जो किसी की न सुनने वाला मनुष्यात्मा निश्चय अन्धकार में जाने या आत्मिक भले के पक्ष में अन्धे होते जाने के खुले अवसर प्राप्त करेगा।

(2) **जीवन पथ में अन्ध और नीच गति परायण जनों की संगत।** आत्मिक भलाई के सच्चे अभिलाषी के विचार से यह दुनियां एक विशाल पागलपन हैं। नीच सुख अनुरागों से बेसुध जनों और नीच सुखों की तृप्ति के विशाल रेले में रत वा लीन, जश्न मनाने वाले, भयानक असरों में वास करना, महा हानि कारक है और इसका हमें अन्धा बनाने में सहयोगी बनना अनिवार्य है। गुरू महाराज माननिय श्रीमती सुशीला देवी को अपने घर जाकर अपने प्यारे भाई बन्धुओं को एक दो दिनों के लिए मिलने जाने के लिए कितना बड़ा फिकर, डर महसूस करते हैं, यह बात उक्त सचाई को बहुत अच्छी तरह उज्जवल करती है।

(3) **लोगों से रात दिन सन्मान पाना:** - मनुष्य सुख का कीड़ा है। उसको सन्मान, प्रशंसा मिलने के साथ स्वभाविक सुख मिलता है और बहुत तृप्त होता है। हम बचपन में एक 75 - 80 वर्षिय बहुत बजुर्ग को देखकर यह कहकर "खेड़ा जंग बहादुर की जय" उससे पैसा दो पैसे हमेशा ले लेते थे। ऐसा 8 - 10 वर्षों तक बच्चे हररोज़ यह जय बुलाकर पैसे लेते रहे हैं। वह बजुरग खुशी खुशी अपनी जय बुलाने वालों को पैसे बांटते रहे। अपने मान, सन्मान, प्रशंसा, की भूख और चाह चाहे कितनी भी मीठी लगे, परन्तु मनुष्य को भयानक नशे की तरह जितना यह पागल करती है और अपना मुल्यांकन सम्बन्धी जितना अन्धा करती है उसको पूरा पूरा ब्यान करना कठिन है।

देखने में आया है कि एक एक रिटायरड अफसर, सफाई कर्मचारी, नाई या और सेवादारों के वर्ग के बच्चों को जो उसको सलाम करते, वह उन्हें जूते, पालिश और कपड़ा देकर अपने इर्द गिर्द घुमाकर बहुत खुश रहते, संसारिक प्रशंसा की भूख मीठी तो बहुत लगती है, परन्तु मनुष्य को अंहकार और घमंड से बेहद पागल कर देती है और वह इतना अन्धेरे से भर जाता है कि वह बहुत बड़ा चतुर होकर भी देख नहीं सकता। यहां तक कि देव समाज के कर्मचारी भी प्रशंसा और मान बड़ाई के बढ़ जाने से अपने आपको बहुत ऊंचे लैवल पर होने की कल्पना का शिकार हो जाते हैं। एक कर्मचारिणी ने बताया कि इस समय के एक उच्च पदधारी कर्मचारी ने कहा कि जब वह सुबह सभा के समय निकलें तो सब सेवकों को कतार बद्ध होकर दोनों तरफ खड़े होना चाहिए, जैसे गुरू महाराज के समय खड़े होते थे। अपने आपको इस हद तक मान बडाई के प्रशंसा के अनुरागी मनुष्य अपनी आन्तरिक हालत को कैसे देख सकता है मरासी और भंड मनुष्य की इसी कमज़ोरी की उपज हैं। अपना मतलब सिद्ध करने के लिए झूठी प्रशंसा का सहारा लेने वाले जनों की कोई कमी नहीं।

(4) **धर्म वहीन, नीच गतियों के अधीन अपने लिए सुखदाई और तृप्ति कर और वजूदों के साथ घी खिचड़ी रहना और सन्तुष्ट रहना।** अपने लिए सुखदाई, रूचिकर और तृप्ति देने वाले, सुखों में सहायक जनों का आदी बन जाना, ऐसा ही है, जैसे कोई भैंस वा गाय धूड़ा खाने की आदि हो जाती

है, अगर धूड़ा पाओ तो दूध ले लो, परन्तु यह रूचि अन्धेरे की प्रतीक होती है।

(5) **अपने विरूद्ध अपनी हीनता, नीचता, अपने दोष सुनने के प्रति गहरी अरूचि का होना**, अपने विरूद्ध कुछ न सुन सकना और ऐसा कुछ प्रगट करने वाले जनों को घृणा करना और शत्रु रूप में देखना और उनसे किनारा करना। मनुष्य पागल है, अपने शरीरिक रोगों को जानने के लिए मनुष्य **M.R.I., Screening, X-Ray, Anjography** आदि के लिए हज़ारों रूपये के एक बार नहीं अनेक बार खर्चे कर खुशी खुशी करता है, परन्तु अपने संघातक, जीवन नष्ट करने वाले दोष मुफ्त जानने और सुनने के लिए भी न कोई रूचि रखता है या तत्परता रखता है, बल्कि जैसे तीर से कौआ भागता है और दूर दूर रहता है।

(6) **अपना प्रकृत असल और स्पष्ट आन्तरिक रूप जानने और देखने के लिए उदासीन होना** और अरूचि रखना और नीच रूचिकर किसी अंश अच्छे काम और कारजों में तृप्त और सन्तुष्ट रहकर सन्तुष्ट रहना।

गुरू मिशन के वातावरण हालात जो, "किश्ती बिन मलाह" वाले बन रहे हैं और कई हिस्से अलग बनते जा रहे हैं, इसका भी अधिकतर उक्त अन्धकार ही ज़िम्मेवार है और हो सकता है।

काश! वर्तमान आत्म रक्षक हालात के महा भयानक कहर या घोर आकाल के हालात में हम तुच्छ आत्मा, अन्धा बनाने वाले अवसरों से सांप वा शेर की तरह भयभीत हो सकें और अधिक से अधिक बचने का संग्राम कर सकें।

बलदेव सिंह

अंह अनुराग

अंह अनुराग या मैं का प्यारः श्रीमान कनल जी लिखते हैं- भगवान देवात्मा की देव ज्योति में मैं साफ देख रहा हूं कि इंसानी दिलों की वर्तमान अवस्था बहुत नीच है और मनुष्य आत्माओं की गठन पूर्णतः बिल्कुल अपूर्ण है। जो जन अपने एक या दूसरे नीच अनुराग की गुलामी के कारण बहुत भयानक पापों और जुर्मों के करने वाले हैं, उनके जिकर को छोड़कर यहां पर केवल उन लोगों का जिकर किया जाता है जो दुनियां में भले मानस कहलाते हैं। मैं स्वयं भगवान देवात्मा की कृपा से मोटे मोटे पापों से बचा हुआ हूं। मेरे भीतर एक या दूसरा परोपकार का भाव भी एक सीमा तक मौजूद हैं। मैं दुनियां में एक नेक इंसान कहलाता हूं, परन्तु जब मैं भगवान की देव ज्योति में क्या अपना और क्या अपने जैसे और नेक कहलाने वाले लोगों के दिलों का अध्ययन करता हूं तो मुझे पता लगता है कि उच्च भावों के विचार से हमारे दिलों की कैसी निम्न अवस्था है। मैं देखता हूं कि मेरे भीतर अभी तक कितने ही नीच अनुराग और कितनी ही नीच घृणाएं मौजूद हैं जिनसे सत्य मोक्ष लाभ करना मेरे लिए नितांत आवश्यक है, परन्तु मैं यह उपलब्ध करता हूं कि नीच अनुरागों में से सबसे प्रबल और बहुत भयानक अंह का नीच अनुराग है। इस नीच शक्ति से हमारे दिलों पर इस कदर अधिकार पाया हुआ है कि हम उसको ही जिन्दगी समझते हैं, परन्तु देवात्मा की देवज्योति में मैं यह उपलब्ध करता हूं कि हमारे अस्तित्व का यह अंह

बहुत बड़ा शत्रु है। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि जब ऐसे हालात पैदा होते हैं कि जिनमें इस नीच अंह पर आकर चोट लगती है तो यह मनुष्य की निगाह उल्टी कर देता है और उसे बिल्कुल अंधा बना देता है। इस उल्टी निगाह को देखकर मुझे बहुत दुख होता है।

अंह अनुराग अपनी कमियों और त्रुटियों को देखने नहीं देता। अंह अनुरागी इनके देखने के अयोग्य हो जाता है। जब तक किसी मनुष्य पर अपनी मैं का अधिकार हो तब तक वह अपने आपके विषय में ठीक राय कायम नहीं कर सकता।

अंह अनुराग अपने उपकारियों के प्रति वृथा भय पैदा करता है। अंह अनुरागी का सबसे बड़ा जाप यह होता है कि जो मेरे लिए सुखकर या आरामदेह हो, वह सब आए और जो मेरे लिए दुखकर या तकलीफ देह हो वह सब जाए। अंह अनुरागी जन ऐसे कामों से अनुचित तौर पर डरता है जिनसे अंह का सिर कुचला जाता है और वह उन लोगों से दूर भागता है जो उसके भीतर एक या दूसरे पहलु में बेहतरी लाने के लिए उसके इस नीच अनुराग पर चोट लगाते हैं। जीवन के इस अंह को क्या मैंने अपने जीवन में और क्या औरों के जीवन में अध्ययन किया है। मैं कितने ही ग्रेजुएटों और अन्य जनों को जानता हूं जिन्होंने एक या दूसरे समय में अखबारों के लिए मजमून लिखने की कोशिश की परन्तु वह अपने लिखने के अनुरागी और सम्पादक की ओर से किसी प्रकार की भी दुरस्ती किया जाना न चाहने वालों को यह तलवार के जख्म की तरह मालूम होता था। उन्होंने केवल इसलिए अपने मजमून भेजने बंद कर दिये कि कोई उनके मजमूनों की दुरस्ती करेगा। इस प्रकार से उनके जीवन का रास्ता बंद हो गया और वह अच्छे लेख लिखने के विषय में अपनी योग्यता को बढ़ाकर सफल न कर सके। परन्तु अंह का अंधा कर दने वाला पर्दा इतना भयानक है कि वह इस हानि को हानि ही नहीं महसूस करने देता। अंह अनुराग ने उनको यह देखने के अयोग्य कर दिया कि यदि उनसे योग्य और तजुर्बेकार जनों को उनकी तहरीरों की दुरस्ती करने का मौका दिया जाता तो इससे उनका बहुत भला होता। मैं कितने ही ऐसे जनों को जानता हूं कि जो यह अच्छी तरह महसूस करते हैं कि यदि वह अपने जीवन की बागडोर सत्य और हितस्वरूप भगवान देवात्मा के हाथों में पकड़ा दें तो इससे उनको बहुत फायदा हो सकता है परन्तु वह अपने आपको इस हालत में इसलिए नहीं ले जाना चाहते कि कहीं उनकी गलतियों के दूसरों पर जाहिर किए जाने से उनकी हेठी न हो। भगवान की कृपा से एक हद तक मैंने इस वृथाभय से आजादी हासिल की है, इसलिए मैं अपने लेखों में एक सीमा तक आलोचना और दुरस्ती कराना चाहता हूं परन्तु जीवन के कुछ अंगों में मैं अभी तक आलोचना से भय खाता हूं। काश कि इन अंगों में भी मैं बेहतरी लाभ कर सकूं और अंह अनुराग से उत्पन्न इस वृथाभय से निकल सकूं।

अंह अनुराग जो सम्मान औरों को मिलना चाहिए उसको अपनी ओर मनसूब करता है। अंह अनुरागी जन दूसरों के परिश्रम के फलों को अपनी तरफ मनसूब करता है। मुझे अच्छी तरह पता है कि देव समाज के कर्मचारी भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा ही दूसरों के दिल दिमाग में बेहतरी लाते हैं। दिमागी तौर पर मेरे सामने यह बात अच्छी तरह साफ है। जब किसी सभा में मेरे परिश्रम से आशा से बढ़कर अच्छे नतीजे पैदा हुए हैं, तो मेरा अंह अनुराग मुझे इस प्रकार मुबारिकबाद देने के लिए तैयार हो जाता है जैसे

यह सब कुछ मेरी ही कोशिशों का फल है। इसमें कोई शक नहीं कि भगवान के देव प्रभाव मेरे भीतर प्रवेश करके मुझे यह कहने के लिए मजबूर करते हैं कि इन देव प्रभावों को प्राप्त करके एक-एक अधिकारी आत्मा इससे भी बेहतर नतीजे पैदा कर सकता है परन्तु मेरा अंह अनुराग मुझे ऐसा कहने से रोक देता रहा है और ऐसा इजहार करने में मैं बहुत दिक्कत महसूस करता रहा हूं। अभी तक भी मेरा यह नीच अनुराग दूसरों के परिश्रम के फलों को अपनी तरफ मनसूब करना चाहता है। रूहानी दुनियां में ऐसा अमल एक बहुत बड़ा डाका है परन्तु अंह अनुराग एक-एक जन को ऐसा अनुचित अमल करने के लिए मजबूर कर देता है।

अंह अनुराग मुझे दीन और कृतज्ञ नहीं बनने देता। अंह अनुराग मुझे नेचर में अपनी असल अवस्था को देखने के अयोग्य बना देता हे। जब मुझ पर इसका अधिकार नहीं होता तब मैं भगवान की देव ज्योति में देखता हूं कि मैं एक निहायत ही तुच्छ आत्मा हूं। मैं देखता हूं कि मैं अपने चारों ओर के असरों का नतीजा हूं। मेरे लिए यह उचित है कि मैं इस बात को उपलब्ध करके नम्र बनूं और जिन्दगी के रास्ते में आगे कदम बढ़ाऊं परन्तु अंह अनुराग मुझ पर गालिब आ जाता है कि जिस कारण से मैं और मेरे कई साथी अपने उपकारियों को भूल जाते हैं। इनके और उपकारों को उपलब्ध करने की ओर से लापरवाह हो जाते हैं। अंह अनुराग मुझे यह सोचने की तरफ प्रेरणा करता है कि जो कुछ मैं हूं, यह सब मेरी अपनी कोशिश का फल है। यह अंह का अनुचित अधिकार ही है कि जो मुझे सच्चे अर्थों में दीन और कृतज्ञ नहीं बनने देता।

अंह अनुराग उन्नति के रास्तें में बाधक है। अंह अनुराग में एक और बहुत बड़ा खतरा यह है कि वह इंसान को अपने आप में सीमित रखता है और जो कुछ उसके पास टूटी-फूटी थोड़ी बहुत पूंजी है, उसी पर उसे संतुष्ट रखता है। यह केवल अपनी निम्न शक्तियों की तृप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर उन्हीं के इर्द गिर्द घूमता रहता है। यदि किसी आदमी के ऊपर धन-दौलत, मान मर्तबा, परिवार, लोगों की वाह-आदि के नीच अनुरागों का भी अधिकार हो तो मनुष्य इन्हीं नीच अनुरागों का गुलाम बना रहेगा और अपने अंह अनुराग के कारण वह कभी यह पसंद नहीं करेगा कि इन नीच अनुरागें के द्वारा उसे जो तृप्ति मिलती है उसमें कोई उच्च अनुराग आकर विघ्नकारी हो। इस नीच अनुराग के संबंध में मैंने क्या अपनी जिन्दगी में और क्या औरों की जिन्दगी में बहुत अच्छी तरह से देखा है। किसी मनुष्य के लिए अपने किसी नीच अनुराग को उसके नीच रूप में देखने की तुलना में फोर्टआर्थर के किले को फतह करना आसान है। परन्तु यह भगवान देवात्मा की लासानी देवशक्तियों का ही करिश्मा है कि हम लोग वर्षों के पाले हुए नीच अनुरागों के भयानक रूप को उपलब्ध करके एक या दूसरी सीमा तक उनसे उद्धार लाभ करने के योग्य हुए हैं।

अंह अनुराग हानि परशोध के साधन में रोक बनता है। यह अंह का नीच अनुराग अक्सर आदमी को हानि प्राप्त जनों के संबंध में हानि परिशोध का साधन करने से रोकता है। जैसी कुछ इंसानियत की वर्तमान अवस्था है, वह इसी नीच अनुराग की बीमारी के बढ़ाने में ही सहायक प्रमाणित होती है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि जब भगवान के किसी सेवक ने उनके देव प्रभावों को पाकर कोई हानि का साधन

करना चाहा है और जिस आदमी का नुकसान किया था उसके चरणों में सिर रखकर क्षमा मांगने का इरादा किया है, तो उस सेवक के संबंधियों ने उसको ऐसा करने से रोकने की कोशिश की है। दुनियां का यह फतवा है कि यदि कोई जन ऐसे आदमी से जाकर क्षमा मांगेगा कि जिसका उसने नुकसान किया है, तो ऐसा करने से क्षमा मांगने वाला जन घटिया दर्जे का वजूद बन जायेगा। परन्तु भगवान देवात्मा की देव ज्योति यह दिखाती है कि हानि परिशोध का साधन करने से एक-एक जन पहले की तुलना में बहुत उच्च बन जाता है। ओह! भगवान देवात्मा की शिक्षा और अन्य धर्ममतों के लोगों के अनुभव और उनकी शिक्षा में कितना जमीन आसमान का अंतर है।

इस नीच अनुराग से मोक्ष प्राप्त करना बहुत ही मुश्किल काम है। मैं यह देखकर बहुत हैरान हूं कि भगवान को किस प्रकार इस अंग में निहायत शानदार कामयाबी हासिल हुई है। यह मेरी जिन्दगी का तजुर्बा है कि जब मुझे भगवान के देव प्रभाव मिलें हैं तब मैंने तुच्छ आत्माओं के पास पहुंच कर उनके चरणों में सिर रखकर उनसे क्षमा मांगी है। देव प्रभावों ने मुझे केवल यह दिखलाया है जो कुछ तुमने अमल किया है, वह बहुत खराब है। इस बात की मुझे परवाह नहीं होनी चाहिए कि जिस आदमी की मैंने हानि की है वह कौन है। मेरे सामने केवल यह बात रहनी चाहिए कि इस आदमी के हृदय को मैंने अनुचित रूप से जख्मी किया है, तब उसके लिए दुखी दिल से क्षमा मांगकर और हानि प्राप्त जन की एक या दूसरी सेवा करके मुझे उसके जख्मी दिल पर मरहम लगानी चाहिए। भगवान देवात्मा के देवप्रभावों का यह सच्चा करिश्मा है।

अंह का नीच अनुराग मनुष्य को बहुत भयानक गुनाह करने के लिए मजबूर करता है। कई बार अंह अनुराग आदमी को भयानक पाप, जुर्म और कृतघ्नता के अमल करने के लिए मजबूर करता है। इसी कारण पहला किया हुआ पाप और दुगना हो जाता है। हानि प्राप्त जन से क्षमा न मांगना एक बात है लेकिन हानि प्राप्त जन को इसलिए और अधिक हानि पहुंचाने के लिए तैयार हो जाना कि उसने हानि प्राप्त करने में विरोधता क्यों की है या उसके संबंध में किसी और के पास शिकायत क्यों की है। अपने कारोबार के दौरान में मुझे इस प्रकार की बहुत सी घटनाओं को जानने का अवसर मिला था। मैंने स्वयं देखा है कि एक-एक बदमाश एक-एक पवित्र स्त्री की इज्जत उतारना चाहता है, जब इसमें वह असफल होता है और वह स्त्री उसके विरूद्ध शिकायत करती है तो यह बदमाश उस स्त्री के सारे खानदान को नष्ट करने के लिए तैयार हो जाता है। उसके अंदर से यह शैतानी आवाज निकलती है कि जब मैं उसकी इज्जत उतारना चाहता हूं तो उसको क्या अधिकार प्राप्त कि वह मेरा मुकाबला करने और अपनी रक्षा के लिए हाथ पांव मारने की कोशिश करे। भगवान के संबंध में उनके एक बहुत सालों के बहुत बड़े उपकृत आदमी का परले दर्जे की कृतघ्नता का बयान उपरोक्त बयान को बहुत अच्छी तरह से प्रगट करता है। उसने अपने पूजा के योग्य ओर सबसे बड़े उपकारी गुरू के संबंध में केवल इसलिए गंदी से गंदी बकवासी की क्योंकि भगवान ने क्या अपनी और क्या अपने महान कार्य की रक्षा के लिए उसकी गलत बातों की तरदीद की जो उसने देव समाज से अपनी अलहदगी के बारे में पब्लिक में बयान की थी। ओह! अंह का नीच अनुराग इंसान से क्या

कुछ नहीं करा सकता।

अंह के नीच अनुराग के इन कारनामों को देखकर मेरा दिल कांपता है। मनुष्य की यह बहुत तर्सनाक अवस्था है कि वह देवात्मा की देव ज्योति से खाली होने के कारण सच्चे आत्मज्ञान से खाली होने के कारण सच्चे आत्मज्ञान से वंचित हैं। देवात्मा की देव ज्योति यह दिखाती है कि केवल यही एक नीच अनुराग आत्मा को तबाह करने और उसे अपने उपकारियों से बागी बनाकर जहन्नुम का राही बनाने के लिए काफी है। काश कि जीवनदाता भगवान की देव ज्योति और उनके देव तेज को पाकर हम लोग इस नीच अनुराग की गुलामी से छुटकारा पा सकें।

(पी.बी. कनल)

ऐसे थे मेरे माता पिता

मेरे बहुत बहुत श्रद्धा और सन्मान के योग्य, मेरे बहुत बड़े उपकारी, मेरे रक्षाकर्ता, शिक्षादाता मेरे प्यारे माता जी और पिता जी,

सत्य देव की जय के साथ आपके श्री चरणों में प्रणाम करती हूं और आपके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करती हूं।

वैसे तो आप दोनो की फोटोज़ को प्राय: हररोज़ प्रणाम करके आपके उपकारों को याद करके आपके आशीर्वाद प्रार्थना करती हूं, परन्तु आजकल माता-पिता, सन्तान व्रत के दिनों में विशेष रूप से आपके उपकार याद आ रहे हैं। सर्वप्रथम आपका यह महान उपकार है कि आपने मुझे जन्म दिया, अच्छा शरीर दिया, ऐसी शक्ल दी जिससे किसी के मजाक की चीज़ नहीं बनें, बहुत अच्छी मान्सिक शक्तियां दी, जिससे पू० भगवान की शिक्षा को कुछ समझने की योग्यता आई। हृदय के अच्छे भाव दिए, यह विरासत बहुत नायाब है और बहुत कम सौभाग्यवान जनों को प्राप्त होती है।

इससे हमारी अच्छी परवरिश वा शिक्षा के लिए आपने जो घोर संग्राम किए हैं, उनकी छवि सामने लाकर दिल आपके आगे नतमस्तक है। पिता जी, आप जब कर्मचारी बन गए थे और आपके अन्दर पू० भगवान के मिशन में मर मिटने की चाह थी, परन्तु आर्थिक हालात खराब होने के कारण यह कारज छोड़कर आपको र्फाम सम्भालना पड़ा, आपकी वह तड़प, रूदन मैंने देखा है, आप किसी कीमत पर भी गुरू का कारज छोड़ना नहीं चाहते थे, परन्तु हम बहन भाईयों के लिए आपने न चाहकर भी यह त्याग किया और यूपी की आबोहवा में आपको दमे के दौरे पड़ने लगे, पूरी पूरी रात जागकर और बैठकर काटते, सुबह फिर दवाईयां लेकर काम पर निकल पड़ते, आपकी वह तकलीफ किसके लिए? केवल हम बहन भाईयों को बेहतर जीवन देने के लिए। बेशक गुरू के मिशन के एक सिपाही बनकर आपने गुरू के कारज का वहां पर भी तहलका मचा दिया, बड़े बड़े सत्संग रखे, आदमी बदले उसे एक प्रचार का क्षेत्र बना दिया, आपके गुरू मिशन के लिए जज़बा बेहद सराहनिय है।

प्यारे माता जी, आपने भी हमेशा कन्धे से कन्धा मिलाकर पिता जी का साथ दिया। यदि गुरू मिशन का काम करने के लिए उन्होंने अपनी बहुत

चोटी पर पहुंची हुई अपनी डाक्टरी की प्रैकटिस छोड़ी तो आपने पूरा साथ दिया, यदि उनके साथ फार्म में जाकर काम करना पड़ा, तो उनका दिलों जान से साथ दिया, वह अन्धेरे से डरने वाली माता ने रात रात भर लालटेन लेकर लेबर से काम करवाया, गम बूट डालकर खेतों में धान वा गन्ने की बुआई करवाई। पिता जी को बिमारी में सम्भाला, परन्तु हम बच्चों को होस्टलों में डालकर हमारी शिक्षा का पूरा ख़्याल रखा, हमारा रहन सहन इस प्रकार रखा कि हम किसी बहन भाई को **complex** नहीं आने दिया घर के काम, बाहर के काम, सूई सिलाई, कढ़ाई का काम भी आप बखूबी जानती थी। सब की सेहत के विषय में बहुत सतर्क थी। अनपढ़ होकर भी अपनी बात चीत वा किसी भी विषय पर वाद विवाद कर लेती थी। आप दोनों में जो मेहनत आई और माता जी आप में विशेष रूप से जो साहस था, उसकी विरासत हम बच्चों को मिली, इस की दुनिया के पदार्थों से कहीं बढ़कर कीमत है। मैं जब अपने और निकटी सम्बन्धियों को देखती हूं तो हम बहन भाईयों से बेहद अन्तर है, यह सब आपकी विरासत और बचपन से हमें अच्छी संगत में रखने की कोशिश का फल है।

आपका सबसे बड़ा उपकार है वह है परम पू० भवान देवात्मा की शरण को पाना और उससे लाभ उठाना और उसके कारण हमारा समाज से जुड़ जाना। जो बहन भाई पूरी तरह से समाज़ की प्रतिज्ञाएं पूरी नहीं भी करते, उनपर भी सत्गुरू के प्रभावों का स्थाई असर है। आपस में बहन भाईयों का मेल, सन्मान इसका परिणाम है। सब ही माता पिता के उपकारों को अनुभव करते हैं और दिल जान से आपकी सेवा की है। आपके जाने के बाद भी हम सब बहन भाई इकट्ठे होते हैं और मिलकर बेहद खुश होते हैं। भाईयों की इकट्ठे रहने की एक श्रेष्ट उदाहरण है और उनके घर में हमारा बढ़चढ़ कर स्वागत होता है। यह सब देव समाज की शिक्षा का और आपकी विरासत का फल है।

पिता जी, आपने छोटी उमर में मुझे विकासालय में रखकर मुझे पू० भगवान की शिक्षा को समझने का अवसर दिया, जहां मैंने विकासालय की परीक्षाएं पास की, उसके 1986 - 87 में मैंने पू० भगवान रचित ग्रन्थों की परीक्षा न केवल अपने साथियों में प्रथम रहकर पास की बल्कि एक जन जिन्होंने मेरे एक दो पर्चे देखे थे, मुझे यह कहा कि मैंने आजतक इतना अच्छा लिखा हुआ नहीं देखा, मैंने आपके पर्चे सम्भालकर रखे हैं, यह सब आपके द्वारा मान्सिक वा हार्दिक योग्यता का ही फल है, यदि आप मुझे ऐसे वातावरण में न रखते तो यह मेरे लिए असम्भव था।

आपकी गुरू मिशन के प्रति लगन ने ही आपको यह निर्णय लेने के लिए मजबूर किया कि अपनी लड़कियों की शादियां जहां तक हो देव समाज परिवार में हो, यदि आपके दामाद समाज में काम करे तो आपको असल सन्तुष्टी मिले, जहां माता पिता अपनी बेटियों के लिए धन, जायदाद रखने वाले वा उच्च पद - धारी देखते हैं, वहां आपने मेरे लिए गुरू के प्रति समर्पित जन को महत्व दिया। उससे मैं अपने जीवन में बरकतों का अम्बार देखती हूं, जो मेरी और बहनों वा निकटी रिश्ते में बहनों को प्राप्त नही हुए। उससे मुझे, मेरे परिवार को क्या दुनियवी और क्या रूहानी बरकतों की कोई सीमा नहीं रही। बच्चे इस वातावरण में पले, विरासत अच्छी मिली, वह हमारे लिए हर कुर्बानी करने को तैय्यार हैं। हमारे जीवन को सुख - मय बनाने का हर सम्भव प्रयास करते हैं। इस

नर्क भरे संसार में जहां माता पिता बच्चों के हाथों सताए वा तड़पाए जाते हैं, वहां ऐसे बच्चों का मिलना, यह सब सत्गुरू की कृपा है, जिनका दर आपने दिखाया।

आपके अथाह उपकारों के साथ मुझे उन महान उपकारियों की भी याद आ रही है, जिन्होंने पैदल चल चलकर, अपने बिस्तर उठाकर आप को अधिकारी जान आप तक देवात्मा का सन्देश पहुंचाया। विशेष सन्मान वा श्रद्धा के योग्य श्रीमान मेवा सिंह जी, श्रीमान हरनाम सिंह जी मलके, श्रीमान पंडित नेतराम जी जिनमें प्रमुख हैं, उनकी मेहनतों को फल हम भोग रहे हैं।

माता जी आपके और गुणों के भिन्न आपने अनपढ़ होकर विकासालय की परीक्षा पास की और यह लेख लिखवाया "शरण तुमरी न आती मैं, तो क्या होती कहां होती" यह कमाल की योग्यता को दर्शाता है। आप दोनों के भीतर अपने सेवादारों के प्रति बेहद हमदर्दी थी, जो भी हमें विरासत में मिली है।

आपके गुणधारी, उपकारी, सेवाकारी, गुरू के प्रति समर्पण की भावना को देखकर वा याद करके जहां मेरा दिल आपके आगे झुक रहा है, वहां मुझे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य नज़र आता है कि मुझे आपके घर में जन्म लेने का अवसर मिला और कुछ कुछ आपके गुणों की विरासत पाने का सौभाग्य मिला।

आपकी धन्यवाद सहित तुच्छ बेटी।

सुरजीत

चण्डीगढ़ में माता-पिता सन्तान ब्रत

मकान नं 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ में माता पिता सन्तान ब्रत 19.1.2014 को हमेशा की तरह इस वर्ष भी मनाया गया। इस सभा का संचालन माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने किया। इसमें जगदीष जी उनकी धर्म पत्नी उनका बेटा, पोता, उनके दामाद और उनके बच्चे, श्रीमान सुभाष जी अग्रवाल, उनकी धर्म पत्नी बहु, बेटे और पोते, श्रीमान मधू सूदन जी, श्री जलधर जी और उनके बेटे, विनोद जी खेड़ा, शशी जी आदि धर्म सम्बन्धी शामिल हुए।

सर्वप्रथम पू० भगवान का फूलों द्वारा अर्चन किया गया, फिर जगदीष जी ने महिमा विषयक भजन का हृदय गत भावों से गान किया, फिर देव स्तोत्र का गान वा बहुत विस्तार से सभापति जी ने भाव पूर्ण होकर व्याख्या की, फिर गुरू महाराज के दरबार में सहाय प्रार्थना की, उसके बाद "श्रद्धेय भाजन मात पिता जी," नामक भजन का सबने मिलकर गान किया, बहुत अच्छा वातावरण बना।

फिर सभापति जी ने फरमाया कि हम सदा अपने आपको अच्छा और बढ़िया ख़्याल करते है, परन्तु हम तभी अच्छे हैं यदि हमारे सम्बन्ध अच्छे हैं, क्या हम अच्छे बेटे वा बेटी, अच्छे पति वा पत्नी, अच्छे भाई वा बहन, अच्छे देशवासी हैं? अर्थात और सब सम्बन्धों में क्या हमारे व्यवहार अच्छे हैं, तभी हम अच्छे इन्सान बन सकते हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा ने हम बर्बर, जंगली वा असम्य लोगों तक अपने प्रभाव पहुंचा कर हमें माता पिता का रूप दिखाया है। फिर उन्होंने अपने विषय में बताया कि उनका अपनी माता के सम्बन्ध में व्यवहार बहुत रूखा और अपमान मूलक था, पाठ पूजा करता था परन्तु अपने आपको धर्मवान, समझकर भी माता

का रूप कभी नज़र नहीं आया, उल्टा यहां तक कह दिया कि मां ने हमारे लिए किया ही क्या है? ऐसे अबोधी ने जब धर्म विकासालय में एक बार सुबह प्रार्थना शील होकर गुरू के दरबार में प्रार्थना की कि मुझे मेरे दोष नज़र आएं, मैं किस पानी में हूं, प्रार्थना करते करते मुझे गुरू की ज्योति की किरण मिली और पहली बार माता का रूप नज़र आया कि किस प्रकार तलाब में मुझे बचाने के लिए माता ने छलांग लगा दी थी, जबकि वह तैरना भी नहीं जानती थी, ऐसी जान निछावर की घटनाएं याद आने लगी और अपने अपमान मूलक व्यवहार याद आने लगे और पहली बार मैंने जाकर माता के चरणों में सिर रखकर देर तक प्रणाम किया और आंसू बहाता रहा। उसके बाद आज तक हररोज़ उन्हें प्रणाम करता हूं। माता पिता के पैरों में सिर रखकर प्रणाम करने से हमारे बुरे व्यवहारों पर रोक लगती है, कम से कम हम सबको इस प्रकार प्रणाम तो अवश्य करना चाहिए।

माता पिता के गुणवान रूप को देखने की आवश्यकता है। एक जन को पूछने पर कि क्या तुम्हें अपने माता पिता के कोई गुण नज़र आते हैं, तो उन्होंने न में जबाब दिया, फिर जब उसके माता पिता के गुण बताए गए तो उसको कुछ समझ आई।

हमारे लिए तीन बातें बहुत अवश्यक हैं, माता पिता के उपकार देखना उनके गुण देखना और उनके प्रति अपनी ग़ल्तियों को देखना, तभी यह सम्बन्ध बेहतर हो सकता है और यह सब पू० भगवान के पैदा किए हुए इस वातावरण में ही सम्भव है।

फिर उन्होंने उपस्थित जनों को ब्यान करने के लिए कहा:-

श्रीमान जगदीष जी कुकड़: - उन्होंने भरे दिल से अपने माता पिता के गुणों का वर्णन किया उन्होंने बताया कि उनके पिता बेहद ईमानदार थे, हमारी आटा चक्की थी, उसमें उन्होंने कभी बेईमानी करने की सोची भी नहीं, इसलिए उनके पास बहुत अधिक ग्राहक आते थे। पिता जी न्याय प्रिय थे, गांव में रहने वाले गरीब लोगों के झगड़े वह निपटाया करते थे, वह लोग कोंट में नहीं जाते थे। वह किसी का पक्ष नहीं करते थे। वह केवल 5 कलास पढ़े थे, परन्तु उनके भीतर गज़ब का आत्म विश्वास था। बड़े से बड़े अफसर के सामने घड़ल्ले से बात करते थे। मेरे में वह गुण नहीं आए।

उन्होंने बताया कि उनकी माता बेहद मेहनती थी। सुबह 4 बजे से लेकर रात के 10 बजे तक वह सब घर का काम करती और इसके साथ साथ हमारे कई किराएदार थे, उनके हर दुख में सहायक होती, कई बार रात भर भी जागना पड़ता, परन्तु वह कभी पीछे नहीं हटती थी। उनका सबसे बड़ा उपकार है कि उन्होंने मुझे ऐसे गुरू से जोड़ दिया, जहां आकर मेरा और मेरे परिवार का बेहद भला हुआ है। काश! मैं, मेरा परिवार इसकी कदर कर सकें। जगदीष जी के दिल की हालत अच्छी थी और उनका दिल बार बार भर-भर आता था और अपने माता पिता के प्रति झुक रहा था और गुरू महाराज के चरणों में आना अपना बेहद बड़ा सौभाग्य महसूस करके धन्य धन्य होने से उनका दिल उछल रहा था और भगवान के चरणों में वनीत भाव से झुक रहा था। और उन्होनें ऐसी हृदयगत कामना की कि काश! मेरे बच्चे और परिवार हमेशा हमेशा इस दर से जुड़े रह सकें।

श्रीमान सुभाष जी अग्रवाल : - उन्होंने भी खड़े होकर अपने माननिय पिता और माता के सम्बन्ध में बहुत भरे दिल से ब्यान किया, उन्होंने अपने पिता जी के इस उपकार का वर्णन किया कि बचपन

में जब उनके जीने की कोई आशा नहीं थी, जो वह मुझे सेहत में बेहतरी के लिए सोलन ले गए और जब वहां भी कुछ लाभ न हुआ तो वह वापिस आने के लिए तैय्यार थे परन्तु बख्शी जी के कहने पर रुक गए और उन्होंने दवाई दी और मैं धीरे धीरे ठीक हो गया, मुझे बचाने का यह उनका बहुत बड़ा उपकार है।

पिता जी कभी ताड़ देते थे, सख्त हो जाते थे, पर मां का बहुत प्यार मिला, उन्होंने कभी ऊंगली भी नहीं उठाई, परन्तु पिता जी का बड़ा उपकार है कि ऐसे सत्गुरू से जोड़ दिया, जिससे हमारी बहुत रक्षा हुई है।

पिताजी को रू० पैसे कमाने या धन इकट्ठा करने की कोई कीमत नहीं थी, उन्होंने या तो पढ़ाने का काम किया या संगत में रहकर समाज सेवा करके अपना भला किया। उन्होंने आख़री समय यह भी कहा कि मैं तुम्हारे लिए धन नहीं छोड़ रहा, मगर मैं जिस गुरू से आपको जोड़ा है, इससे बड़ा दुनियां में कोई और धन नहीं है। आप हमेशा इसकी कदर करें और इससे जुडे रहें, इसमें सबका भला है। उनके हृदय पर भी अपने माननिय माता पिता के प्रति, सन्मान, श्रद्धा और मेहरबानी के भावों का साफ प्रभाव दिखाई दे रहा था। उन्होंने भी अपने उपस्थित बेटे और बच्चों के सम्बन्ध में यही कामना की कि ऐसे महान और अद्वितीय दर से मेरा परिवार सदा सदा जुड़ा रहे।

<u>श्रीमान मधू सूदन जी:</u> - उनका दिल भरा हुआ था कि और बार बार वह फूट फूट कर रोने के लिए विवश हो जाते थे। उन्होंने भगवान का दर दिखाने के लिए जीजी (श्रीमती विद्यावती जी खेड़ा) वनीत जी और अन्य जनों को रो रोकर धन्यवाद दिया। अपने माता पिता के रूप और महिमा का बार बार हृदय से फूट फूटकर ब्यान किया। उनका दिल बार बार कृतज्ञता के भाव से भर भर आ रहा था और उनके हृदय वनीत भाव से उनके चरणों में झुक रहा था। वह आगे ज़्यादा भावुक हो जाने और बेबस फूट फूट कर रोने के कारण अपना ब्यान जारी न रख सके और भगवान के आगे झुक कर बैठ गए।

माता - पिता का सन्मान: - इसके बाद सब हाज़रीन ने फूल मालाओं से अपने माता पिता का सन्मान करके उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम करने का साधन किया, वह दृष्य भी एक स्वर्गिय और न्यारा दृष्य था।

पहले श्री सुभाष जी ने और उनकी धर्म पत्नी ने सुभाष जी के माता पिता के फोटोज को हार पहनाकर प्रणाम किया, फिर उनके बेटे और बहू ने सुभाष जी का और उनकी पत्नी का अर्चन करके पावों में सिर रखकर प्रणाम किया। इसी तरह श्रीमान जगदीष जी और उनकी पत्नी ने जगदीष जी के माननिय माता जी की सुन्दर फोटोज को सुन्दर मालाएं पहना कर प्रणाम का साधन किया। फिर बाबु विनय जी ने अपने माता को हार पहनाकर उनके चरणों में बार बार सिर रखकर प्रणाम का साधन किया, जिस तरह पिता पुत्र सनेह से एक दूसरे को चिपटे हुए थे, वह बड़ा सुन्दर दृष्य था, बाबू जी ने बेटे ने अपने पिता के चरणों में प्रणाम का साधन किया, जगदीष जी की बेटी मोना के दोनो प्यारे बच्चों ने अपने पिता को हार पहनाकर और मधुसूदन का हारों द्वारा सन्मान करके प्रणाम किया। इस सुहावने दृष्य के बाद खड़े होकर सब ने जय ध्वनि करके इस प्रभावशाली सभा का समापन किया। सब बच्चों को मिठाई दी गई। और 360 रू० दान एकत्र हुआ।

(एक हाजरीन)

दोस्त हो तो ऐसा

दोस्ती शब्द बहुत प्यारा शब्द है। बहन भाईयों के रिश्ते के बाद हर मनुष्य में दोस्तों का एक अलग स्थान होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह किसी न किसी की संगत चाहता है। बचपन में दोस्त साथ खेलने के लिए चाहिए, थोड़ा बड़ा होने पर अपने दिल की बात जो माता पिता वा बहन भाईयों से भी नहीं की जाती, वह दोस्तों के साथ की जाती है। दोस्त एक दूसरे के रहस्य भी रखते है। बेशक दोस्ती सदा आपको सही राह पर नहीं ले जाती। बुरे दोस्तों के साथ दोस्ती करके एक नौजवान नशई, मांसाहारी, व्यमिचारी, चोर, झूठा आदि भी बन जाता है, परन्तु कुछ अच्छे चालचलन वाले दोस्त सदर्मार्ग भी दिखाते हैं। आपके दुख सुख में स्तम्भ बनकर खड़े हो जाते हैं। दोस्ती अमीरी गरीबी का ख़्याल नहीं करती, इसका दृष्टान्त कृष्ण और सुदामा की दोस्ती है। दोस्ती में यदि ऊंच नीच वा स्वार्थ न हो तो यह रिश्ता सगे भाईयों से भी बढ़कर हो जाता है।

मैं यहां एक ऐसे दोस्त के विषय में बताना चाहती हूं, जो हमारे परिवार के बहुत करीब हैं। पिछले दिनों उनके जीवन की घटना ने हमको बहुत प्रभावित किया। यह दो दोस्त दिल्ली में निकट के घरों में रहते थे। एक के परिवार था दो बच्चे और दो आप, दूसरे ने शादी ही नहीं करवाई थी, इनके परिवार को ही अपना परिवार समझने लगे, बहुत घनिष्ट सम्बन्ध हो गया। पहला मित्र अपनी नौकरी के सिलसिले में दूसरे शहर तब्दील हो गया और परिवार सहित वहां से शिफ्ट हो गए, परन्तु उनकी निकटता बनी रही, कभी कभी वह अकेला दोस्त उनके परिवार के पास रहने के लिए चला जाता क्योंकि वह आर्मी से पहले रिटायर हो चुके थे। अपने दोस्त के बच्चों से बहुत स्नेह करते। दिल्ली में उन्होंने अपना मकान खरीद लिया और अपने मित्र को कहने लगे कि मैं यह मकान आपके नाम वसीयत करना चाहता हूं परन्तु उस निस्वार्थ भाव से सम्बन्ध रखने वाले मित्र ने साफ इन्कार कर दिया। आखिर उन्होंने किराएदार रख लिए और वह उनकी कुछ सेवा करने लगे, वह भी उनके बच्चों को प्यार करने लगे। कुछ समय बाद किराएदार की पत्नी का देहान्त हो गया और इस नेक दिल इन्सान ने उनके घर का सारा बोझ अपने सिर पर ले लिया। उनके एक नौजवान लड़के के नाम घर की एक मंजिल कर दी और वह कुछ दिनों में ही बेचकर अपना काम धन्धा करने लगा, लड़की को पढ़ाया और अपने खर्च से उसकी शादी की। उसको दहेज दिया, यहां तक कि उसके ससुराल के घर को संवारने के लिए भी हज़ारों रू० दिए। लड़की का बाप निक्म्मा था, वह भी मर गया, तो यह शरीफ आदमी अकेला रह गया। जिस लड़की के लिए इतना कुछ किया था, यहां तक कि बाकी मकान की रजिस्ट्री भी उसके नाम कर दी थी, उसने उनकी सुध लेनी भी मुनासिव नहीं समझी। धीरे धीरे अकेलापन और बिमारी ने उन्हें घेर लिया, साथ वाले घर का कोई आदमी हमदर्दी करके उनका पता करता, परन्तु उनकी सेहत बिल्कुल खराब हो गई, चलना कठिन हो गया, तो उस मददगार ने उनके इस दोस्त को फोन किया कि वह आपके दोस्त की हालत बहुत नाज़ुक है। इन्होंने लड़की को फोन करके डांटा कि उनका सब कुछ लूटकर अब उनको कुत्ते की

मौत मरने के लिए अकेला छोड़ दिया, बहुत कहने पर वह उन्हें दिल्ली से लुधियाना तो ले आई, परन्तु तीसरे ही दिन वह चण्डीगढ़ में इस रहमदिल दोस्त के यहां छोड़ गई, उस समय उनको दस्त लगे हुए थे, आप न उठ सकते थे न बैठ सकते थे, परन्तु उन पति पत्नी ने उन्हें आदर के साथ घर में रख लिया और सारी रात पति पत्नी उनके गन्दे कपड़े धोते रहे और यह सोचते रहे कि चलो शुक्र है, अब इनका क्रिया कर्म तो हम आदर सत्कार से कर देंगे, अब बचने की तो कोई आशा नहीं। परन्तु फिर भी उन्होंने अगले दिन पी.जी. आई अैमरजैन्सी में उन्हें मुश्किल से दिखाया और उनका ईलाज शुरू किया। रात दिन यह सच्चा दोस्त उनके साथ रहा। उनकी बेटी ने जो चण्डीगढ़ में ही है, उसने अपने रसूख से अच्छे से अच्छे डाक्टर से सम्पर्क करके मदद की। उनकी पत्नी ने उनसे भी बढ़कर सेवा की। कुछ दिनों के संर्घष के बाद उनकी सेहत में बेहतरी शुरू हो गई। सेवा करते हुए उन्हें ज़मीन पर सोना पड़ा, सारे परिवार ने दिन रात एक कर दिया। बेटा अमरीका में है, उसने भी कहा कि पैसों की ज़रूरत होगी तो मैं भेज दूंगा आप अकंल की पूरी सेवा करो। महीना भर हस्पताल के कष्टों के बाद घर में लाए, तो यह दोस्त उनके साथ सोते रहे, अपनी बाजू को उनकी बाजू से कपड़े से बांधकर रखते ताकि जब वह ज़रूरत के लिए उठना चाहें, वह उन्हें स्वंय लेकर जाएं कि कहीं गिर न जाएं। 2 - 3 महीने सारा परिवार उनकी सेवा में लगा रहा। उनको अकेला छोड़कर पति पत्नी कहीं इकट्ठे नहीं जा सकते। उनके लिए नये कपड़े बनवाए, नई बहुत बढ़िया टोपी ली, उनकी चप्पलें ली। उस दुर्दशा से उनको सिर्फ निकाला ही नहीं बल्कि भविष्य की सारी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। बच्चों ने पत्नी ने पूरे दिल से साथ दिया। अब साल से भी अधिक हो गया। वह सैर करने के योग्य हो गए हैं। देखने में बहुत अच्छी सेहत हो गई है। ऐसे दोस्त और उसके निस्वार्थ जज़्बे को हमारा सलाम है और यही दिल से निकलता है कि दोस्त हो तो ऐसा।

सुरजीत बराड़

शोक समाचार

बहुत शोक कि पुराने भटिंडा निवासी धर्म सम्बन्धी श्रीमान मास्टर हंस राज जी का दुखदाई निधन हो गया है। वह 82 वर्ष के लगभग थे, पक्के ईमानदार थे, उन्होंने रिटायर होकर कई स्थानों में विशेषकर डब वाली और सोलन में ठहरकर बहुत सेवा की, उनका श्राद्ध 2 फरवरी ईतवार को भटिंडा में हो रहा है। हम ऐसे अच्छे साथी के बिछुड जाने पर गहरे शोक और हमदर्दी का प्रकाश करते हैं और उनकी पत्नी और बच्चों के साथ सहवेदना प्रगट करते हैं, देह त्यागी की आत्मा के सम्बन्ध में हर प्रकार की रक्षा, सहायता और शान्ति की कामना करते हैं। वह कितने वर्ष हज़ारों रू० हर महीने दान देते रहे।

बलदेव सिंह

मानवता का वो चेहरा... खो गया अनंत में

बात आज से 23 साल पुरानी है। हिंदुस्तान से हजारों मील दूर दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन शहर में उस दिन सुबह से ही हलचल मची हुई थी। लोगों के झुंड के झुंड शहर में इकट्ठा हो रहा था। वे खुशी से नाच-गा रहे थे। पागलों की तरह चिल्ला रहे थे। पूरी दुनिया का मीडिया वहां पहुंचा हुआ था। सबकी निगाहें शहर के पश्चिमी कोने में बनी एक जेल पर टिकी थी, जिसका नाम था विक्टर वर्सटर। इस जेल को बंदीगृह कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। उस वक्त इसमें कम खतरनाक राजनीतिक कैदियों को रखा जाता था।

उस दिन फरवरी महीने की 10 तारीख थी। साल था 1990। मौसम एकदम साफ था। आसमान में एक सूरज चमक रहा था तो दूसरा सूरज जमीन पर मौजूद दक्षिण अफ्रीकी जनता की निगाहों में भी दमक रहा था। धीरे-धीरे दोपहर बीतने लगी। घड़ी में जैसे ही 3.30 बजे, जेल का मुख्य अहाता खोला गया। हजारों कैमरों के फ्लैश चमक उठे। अपार जनसमूह मे एक हलचल हुई और लोग भाव-विभोर होकर उस एक शख्स को देखने के लिए उमड़ पड़े जो जेल से निकल रहा था। उसके दाएं हाथ की मुट्ठी भिंची हुई थी और बाएं हाथ से उसने एक खूबसूरत महिला का हाथ थाम रखा था। अधपके बालों वाले उस शख्स ने उस दिन सफेद शर्ट पर डॉट प्रिंट वाली टाई लगा रखी थी। हवा में लहराती उसकी मुट्ठी अदम्य साहस, अंतहीन संघर्ष और महान विजय का इतिहास बयान कर रही थी। ये शख्स कोई और नहीं, बल्कि नस्लभेद के खिलाफ अफ्रीकी संघर्ष के महान नायक नेल्सन मंडेला थे और उन्होंने जिसका हाथ थाम रखा था वह उनकी दूसरी पत्नी विनी थीं।

आज इस घटना के कई साल बीत चुके हैं, लेकिन मंडेला की वो तसवीर लोगों के जेहन में आज भी ताजा है। 27 साल बाद जेल से बाहर आते मंडेला को पूरी दुनिया ने लाइव प्रसारण के जरिए देखा था। ये इतिहास का ऐसा लम्हा था, जिसका गवाह बनने के लिए हर कोई बेकरार था। कुछ लोगों के लिए नेल्सन मंडेला एक व्यक्ति का नाम हो सकता है, लेकिन उनके चाहने वालों के लिए मंडेला का मतलब है- फौलादी इरादे, महान करूणा और हिमालय-सी विराट सोच लिए हुए छोटी आंखों वाला एक शख्स, जो विकट से विकट परिस्थितियों में भी मुस्कुराता है।

आज मंडेला बेशक हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनकी उपस्थिति उतनी ही सघन हैं, जितनी उस वक्त थी, जब वे सार्वजनिक जीवन के सक्रिय थे। बीमार होने से कई साल पहले ही 1999 में ही मंडेला ने सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लिया था। उन्हें अपने गांव कुनू में परिवार और कबीलाई लोगों के साथ रहना बेहद पसंद था। नाती-पोतों से घिरे मंडेला परिवार की तसवीरों में उन्हें मुस्कुराते देखा जा सकता था।

रंग-बिरंगे शर्ट पहनने के शौकीन मंडेला के अंदर सामूहिकता की भावना बचपन से ही थी। शायद कबीलाई परवरिश का नतीजा था। वे दक्षिण अफ्रीका के खोसा कबीले से संबंध रखते थे। प्यार से लोग उन्हें मदीबा भी कहते हैं। मदीबा यानी पितातुल्य व्यक्ति। उनके जन्म के समय परिवार समृद्ध था (समृद्धि का मतलब पशुधन, खेत और बाग-बगीचे), लेकिन पिता फाकानिस्वा की मौत के बाद उन पर गरीबी का पहाड़

टूट पड़ा।

उस वक्त उनकी उम्र महज नौ साल की थी। मां को उनकी पढ़ाई - लिखाई के लिए कबीले के राजा जोगिनतबा से मदद मांगनी पड़ी। चूंकि मंडेला के पिता ने राजा जोगिनतबा को राजगद्दी दिलाने में मदद की थी, इसीलिए उन्होंने भी मंडेला की पढ़ाई - लिखाई को अपना फर्ज समझा और उन्हें अपने राजपरिवार का हिस्सा बना लिया। राजा जोगिनतबा की ही देखरेख में मंडेला की आगे की पढ़ाई - लिखाई हुई। राजा जोगिनतबा ने ही पहली बार मंडेला को जूते पहनने को दिए थे और वहीं स्कूल में उनका नाम रखा गया नेल्सन मंडेला।

पढ़ाई के बाद ही जोगिनतबा ने मंडेला की शादी की योजना बना डाली, असहमत मंडेला घर छोड़कर भाग निकले। उन्होंने अपना नया ठिकाना बनाया सोने की नगरी कहे जाने वाले जोहांसबर्ग को। इसी शहर में मंडेला का राजनीति से जुड़ाव हुआ। उन्हें पहला प्यार हुआ एवलीन से जिससे उन्होंने शादी भी की। हालांकि ये रिश्ता चल नहीं सका, क्योंकि मंडेला राजनीतिक गतिविधियों की वजह से घर - परिवार को समय नहीं दे पाते थे और ये एवलीन को मंजूर नहीं था। इसी दौरान मंडेला अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के सदस्य बन गए। कानून की पढ़ाई और राजनीति दोनों साथ - साथ चल रहे थे।

अफ्रीका में रह रहे भारतीय नेता डॉ० दादू और वाल्टर नायक से मंडेला ने सत्याग्रह का पाठ सीखा तो महात्मा गांधी के पुत्र मणिलाल से मेल - जोल की राजनीति।

50 के दशक तक आते - आते मंडेला का नाम पूरे दक्षिण अफ्रीका में प्रसिद्ध हो चुका था। वे एक जननायक की तरह उभर रहे थे। जाहिर है दक्षिण अफ्रीका की गोरी सरकार अगर किसी से सबसे ज्यादा खतरा महसूस करती थी तो वो मंडेला ही था। उन पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए गए और उन्हें जेल की सजा सुनाई गई, लेकिन इससे मंडेला का आत्मविश्वास कम होने के बजाय और बढ़ा गया। उस वक्त तक मंडेला अहिंसात्मक संघर्ष के जरिए रंगभेद खत्म करने और आजादी हासिल करने की लड़ाई लड़ रहे थे, लेकिन सरकार दमन करने पर उतारू थी। अहिंसक संघर्ष की विफलता देखकर मंडेला ने सशस्त्र संघर्ष की योजना बनाई और एम. के नाम का संगठन तैयार किया। वो इसके कमांडर बने और सरकार के खिलाफ छापामार युद्ध की शुरूआत की।

एम. के. के लिए धन और गोला - बारूद जुटाने का लक्ष्य लेकर मंडेला ने गुपचुप तरीके से विदेश यात्रा की, लेकिन इथोपिया और अल्जीरिया के अलावा और कोई देश उन्हें साजो - सामान देने के लिए तैयार नहीं हुए। खुद मंडेला ने भी इथोपिया में सैन्य कमांडर का प्रशिक्षण प्राप्त करने का संकल्प किया, लेकिन देश की लगातार बिगड़ रही हालत के मद्देनज़र उन्हें अफ्रीका लौटना पड़ा, लेकिन गोरी सरकार को उनके लौटने की भनक लग चुकी थी। 5 अगस्त, 1962 को मंडेला को गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर फर्जी दस्तावेजों के सहारे विदेश जाने और हड़ताल को उकसाने और कम्युनिस्टों से संबंध रखने को लेकर मुकदमे चलाए गए। इसी बीच सरकार को उनके एम. के. संगठन के बारे में भी पता चला गया था। राजद्रोह के आरोप में मंडेला को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें दक्षिण अफ्रीका की सबसे खतरनाक जेल रोबैन आईलैंड में रखा गया। इसकी तुलना भारत के अंडमान - निकोबार द्वीप समूह में बने सेल्युलर जेल

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

से की जा सकती है। जेल में रहते हुए मंडेला को पत्थर फोड़ने थे। इसी की वजह से उन्हें टीबी भी हो गई थी, लेकिन मंडेला तो उन पत्थरों से भी मजबूत निकले जिन्हें वो तोड़ा करते थे।

जेल की जिस अंडा सेल में उन्हें रखा गया था उसे वा तीन कदमों में नाप लेते थे। उस कोठरी की ऊंचाई इतनी कम थी कि उन्हें सिर झुकाकर घुसना पड़ता था। सिर्फ अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस काल कोठरी में मंडेला ने अपने जीवन के लगभग 24 साल कैसे काटे होंगे! ये विश्व इतिहास के महानतम संघर्षों में से एक था। मंडेला कुल 27 साल जेल मे रहे। इसी दौरान कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों में उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिख डाली जिसे वो चोरी से जेल से बाहर भेजते थे। आगे के तीन साल तक उन्हें केपटाउन के विक्टर वर्सटर जेल में रखा गया, जहां से उन्हें 10 फरवरी को आजाद किया गया। जेल से निकलने के बाद वे अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए और 10 मई, 1994 को उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति का कार्यभार संभाला। साल 1998 में करीब 80 साल की उम्र में मंडेला ने ग्रेसा मिशेल से तीसरी शादी की।

मंडेला को प्राप्त 695 से अधिक पुरस्कारों की फेहरिस्त में भारत रत्न और नोबल शांति पुरस्कार भी शामिल हैं। कई देशों ने उन्हें अपनी मानद नागरिकता से सम्मानित किया। महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानने वाले मंडेला जब जेल से छूट रहे थे तो उन्होंने उन पहरेदारों और अधिकारियों को भी धन्यवाद कहा, जिन्होंने उन पर जुल्म ढाए थे। यही थी मंडेला की महानता। मानवता के हित में जितनी विराट राजनीतिक सोच, दिल में उतनी ही महान करूणा... यही वजह है कि उन्हें दक्षिण अफ्रीका का गांधी कहते है।

(दैनिक भास्कर)

कल्याण सत्संग

जैसा कि पहले सूचित किया जा चुका है कल्याण मल्लेका (भटिंडा) में विशेष सत्संग 28 फरवरी शाम से 2 मार्च दुपहिर तक रखा गया है। चाहवान व्यक्ति शामिल होकर लाभ उठाएं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts